卐 ॐ नमः शिवाय 卐

बसुका बुढ़बा श्री शिव-स्तुति

(हिन्दी भाषा)



रचयिता

श्री अभिराम दासजी

प्रथम संस्करण ५०० वर्ष १९९७ मूल्य २.५०

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

बसुका बुढ़बा श्री शिव-स्तुति



(रचयिता)

श्री अभिराम दासजी

कह कर हरि-हर-कथा सदा जो सुख देते हैं।
लोगों के मन को जो प्रफुल्लित करते हैं॥
है यह वही रामदास अभिराम सुहावन।
करती जिसकी वाणी नर-नारी को पावन॥

दो शब्द

एकबार जब मुझे बसुका ग्राम के कुछ लोग बसुका बुढ़बा श्री शिवालय पर श्री शिवजी के सम्बन्ध में सत्कथा सुनाने के लिये ले गये और मैंने वहाँ बसुका ग्राम के समस्त नर-नारी के कल्याण के लिये पार्वती-नयन चकोर चन्द्र भगवान श्री शिवजी की कथा सुनाई, तो मुझे वहाँ शिवालय पर जो आनन्द मिला वह वर्णन से पड़े की बात है।

जब मैं वहाँ का अगम-कुप, भगवान आशुतोष श्री शकर का सुन्दर शिव लिग, मन्दिर का बनावट और वहीं पर फूल, तुलसी और वेल पत्र के लिये छोड़ीं गई कुछ भूमि पर मेरी नजर गई तो और हीं मेरा मन प्रसन्न हो गया।

जब श्री शिव कथा सुनने के लिये आए हुए बसुका का समस्त धार्मिक समाज श्री शंकर कथा सुनकर अपने-अपने घर को चले गये तो कुछही मिनटों के बाद मेरे मन में "बसुका बुढ़बा शिव" केसम्बन्ध में कुछ पद्य लिखने की प्रवल इच्छा हुई। उस समय जो मेरे मुख से बुढ़बा श्री शिव' के सम्बन्ध में हिन्दी भाषा में पद्य निकले उसको मैंने 'बसुका बुढ़वा शिव स्तुति' नाम रखकर हिन्दी भाषा के तीन छन्दों में विभक्त किया। वे छन्द हैं पहला रोला छन्द, दूसरा चौपाई छन्द, तीसरा दोहा छन्द।

संयोगवश एक दिन 'बसुका बुढ़बा शिव' के परम भक्त ग्राम पो०-बसुका थाना-करहियाँ जिला- गाजीपुर (उ० प्र०) के श्री बशिष्ठ नारायण राय जी, मेरी मठिया श्री राम लक्ष्मण जानकी मन्दिर पर श्री भगवान जी को प्रणाम करने के लिये आये हुये थे। तो मैंने अवसर पाकर उनसे इस 'बसुका बुढ़बा शिव स्तुति' सुनने को कहा। उन्होने जब प्रेम भरे मन से

(कृ० पृ० उ०)

इन स्तुतियों को सुना तो इन्हें छपवाने को भी कहा।

इसी तरह दूसरे दिन बसुका वासी शिव के पुजारी श्री भगवान गोसाईं ने भी इन स्तुतियों को सुनने के वाद, इन्हें छपवाने को कहा। तो मैंने समझा कि कहीं 'बसुका बुढ़बा शिव' हीं तो नहीं दोनों अपने भक्तों के रुप में अपनी स्तुति छपवाने के लिये मुझसे कह रहे हैं ? इसलिये बसुका बुढबा श्री शिव-सेवा समझकर मैंने इसे छपवाने का निर्णय किया।

क्योंकि भगवान श्री राम, श्री कृष्ण और श्री नारायण जैसे पूज्य हैं वैसे ही भगवान श्री शिव भी परम पूज्य हैं। इसलिये श्रीमद् भागवत महापुराण और श्री तुलसी कृत राम चरित मानस आदि ग्रंथों में भगवान श्री शिव की महिमा गाई गई है। जैसे श्री भागवत के आठवें स्कंध समुद्र-मंथन काल में उत्पन्न हुए विषम जहर से मुक्ति पाने के लिये भगवान श्री शिव से अपनी रक्षा के लिये देवताओं ने गुहार की है

देव देव ! महादेव ! भूतात्मन् ! भूतभावन।
त्राहिनः शरणापन्नान् त्रैलोक्य दहनाद् विषात् ॥

श्री राम चरित मानस में किष्किन्धा काण्ड के आदि में जैसे :-

जरत सकल सुरवृंद, विषम गरल जेहि पान किय।
तेहि न भजहि मन ! मंद !, को कृपाल शंकर सरिस ॥

अतएव मैं 'बसुका बुढ़बा शिव स्तुति' लिखकर स्वर्गीय राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त' की अमर वाणी का स्मरण कर-

'अर्पित हो मेरा मनुज काय-
बहु जन हिताय बहुजन सुखाय'।

अपनी वाणी को पवित्र करने के लिये तथा आप पाठक पाठिकाओं की वाङ्मयी सेवा के लिये समर्पित करता हूँ। यदि इस छोटी सी पुस्तिका से आप पाठक तथा श्रोताओं को थोड़ा भी सुख और आनन्द

मिला हो तो मैं अपने लघु परिश्रम को सफल समझूँगा। साथही साथ बसुका ग्रामवासी मास्टर श्री जनार्दन रायजी ने जो इस पुस्तक के सम्बन्ध में अपनी अमूल्य सम्मत्ति दी है उन्हें भी आशीर्वाद के साथ धन्यवाद प्रदान करता हूँ। अस्तु। जय श्री पार्वती-नयन चकोर-चन्द्र श्री शिवजी की।

आपलोगों का स्नेहभाजन :-

अभिराम दास

महंथ

श्री राम लक्ष्मण जानकी मन्दिर (मठिया)

बसुका, करहियाँ; गाजीपुर (उ॰ प्र॰)

१७-९-१९९७

सम्मत्ति

श्री राम लक्ष्मण जानकी मन्दिर, बसुका (मठिया) के महन्थ गुरु श्री अभिराम दासजी महाराज द्वारा लिखी गई बसुका बुढबा श्री शिव स्तुति एक अच्छी पुस्तक है। जिसको पढ़ सुनकर भगवान शंकर के प्रति लोगों में प्रेम और अनुराग होगा। इसमें बसुका के दुढबा शिवाला के श्री शिवजी को संतुष्ट करन के लिये राष्ट्र भाषा हिन्दी में बड़ी ही अच्छी तीन स्तुतियाँ है, पहला छन्द है रोला दूसरा छन्द है चौपाई और तीसरा छन्द है दोहा।

मैं आशा ही नही पूर्ण विश्वास करता हूँ कि इस छोटी सी पुस्तक के द्वारा बसुका ग्रामीण समस्त नर-नारी का महा कल्याण होगा।

आपलोगों का हितचिंतक-

जनार्दन राय

एम॰ ए॰, बी॰ एड॰

शिक्षक

नेहरू विद्यापीठ इन्टर कॉलेज

रेवतीपुर; गाजीपुर (उ॰प्र॰)

१६-९-१९९७ ई॰

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

—। मंगलाचरण :—

श्री गौरी गणेश शिव, राम कृष्ण पद नाइ ।
लिखता बुढ़बा शिव स्तुति, जन अभिराम सुगाइ ॥

बसुका बुढ़बा श्री शिव स्तुति

(रोला छन्द)

हे बुढ़बा शिव ! दया करो हम दीन जनों पर ।
दर्शन करने आये निकट हाथ जोड़ कर ॥१॥
तू हो औढर दानी, शंकर पार्वती - वर - ।
कृपा करो हे आशुतोष ! मुझ पर शिव ! ईश्वर ॥२॥
कार्तिक गणपति दोनों हैं शिव ! लाल तुम्हारे ।
विश्वनाथ तुम हरो हमेशा दुःख हमारे ॥३॥
बुढ़बा शिव कहते हैं, बसुका ग्राम - निवासी ।
हे गौरीपति ! शिव तुम तो हो काशी वासी ॥४॥
हे बुढ़बा शिव ! तेरी महिमा गाता निसि दिन ।
रह कर के अभिराम दास, बसुका में सब दिन ॥५॥
आक, धतूर, वेलपात, फूलों से तेरे— ।
पूजा करते बसुका वासी, साँझ सवेरे ॥६॥
धूप आरती करते हैं जो, जन तन मन से ।
उनका घर भर जाता है शिवजी ! धन - जन से । ७॥
विष्णू शिव हैं एक न उनमें भेद कहीं है ।
बता रहे हैं सब दिन, चारों वेद यही है ॥८॥
बुढ़बा शिवजी, सब की आशा पूरा करते ।
शरणागत जन के घर को धन जन से भरते ॥९॥
बुढ़बा शिव का स्त्रोत्र यह, लिखा दास अभिराम ।
बसुका में रह कर सुखद, पावन लोक ललाम ॥१०॥

बसुका बुढ़वा श्री शिव स्तुति

(चौपाई छन्द)

हे बुढ़बा शिव ! दया निधाना ।

हो शंकर ! शिव ! कृपा निधाना ॥१॥

जो तेरे समीप आते हैं ।

वे धन जन विद्या पाते हैं ॥२॥

बुढ़बा शिव है श्री गौरी-पति ।

बुढ़बा शिव हीं है श्री पशुपति ॥३॥

बुढबा शिव हैं श्री काशीश्वर ।

बुढबा शिव ही है रामेश्वर ॥४॥

हैं केदार नाथ बुढ़बा शिव ।

हैं श्री बैद्यनाथ बुढ़बा शिव ॥५॥

बुढ़बा शिव सब कुछ देते हैं ।

मानव के सब दुख हर ते हैं ॥६॥

बुढ़बा शिव हैं दीन दयाला ।

कर त्रिशूल धर डमरु बाला ॥७॥

बुढ़बा शिव बाघम्बर बाला ।

है अभिराम दास प्रतिपाला ॥८॥

हरि-हर में नहि भेद भाव हैं ।

चार बेद नित यही गाव हैं ॥९॥

राम दास अभिराम यह, बुढ़बा शिव-स्तुति सार ।

बसुका वासी बन लिखा, मनबान्छित-दातार ॥१०॥

जय श्री शंकर

बसुका बुढ़बा श्री शिव-स्तुति

(दोहा छन्द)

हे बुढ़बा शिव! दया निधि, गौरी पति! जन-पाल।
कृपा करो मुझ दीन पर, आकर ईश कृपाल! ॥१॥
डमरू-धर! शंकर! प्रभो! हे बुढ़बा शिव! ईश।
नाथ! बचाओ विपत्ति से; हमको आज गिरीश ॥२॥
हे त्रिशूल धारिन्! विभो, बुढ़बा शिव! सुर-पाल।
आये हैं हम शरण में, तेरे दीन दयाल ॥३॥
बसुका बासी तूँ बने, हे बुढ़बा शिव! नाथ!।
मुझको अपना जानकर, कर दो आज सनाथ ॥४॥
बाघम्बर वाले शिव!, उमानाथ! भगवान।
कार्तिक गणपति के पिता, बुढ़बा शिव! सुख खान ॥५॥
बसुका-पूरब टोल में, है तेरा अस्थान।
बुढ़बा शिव सब के करे, रात-दिवस कल्याण ॥६॥
आते तेरे निकट जो, जन उनका सम्मान।
बुढ़बा शिव! तुम कर रहे, होकर कृपा निधान ॥७॥
करता हूँ शिव प्रार्थना, बुढ़बा शिव! सुख-धाम।
हाथ जोड़ तेरीं प्रभो, रामदास अभिराम ॥८॥

-: फल श्रुति पाठ महिमा :-

जानकि-राम-लखन-मन्दिर बसुका के सेवक।
जन अभिराम दास द्वारा निर्मित सुखदायक॥
यह बसुका बुढ़बा शिव-स्तुति जो पाठ करेंगे।
धन जन शुभ-दिन उनके घर में सदा रहेंगे॥

:- समर्पण :-

हे श्री गुरुवर! "गौरी शंकर दास" दयालु।
तुम हो परम कृपालु लोकहित दीन दयालु॥
मैं अभिराम दास करता हूँ तव पद वन्दन।
करके "बसुका बुढ़वा शिव:स्तुति" देव समर्पण॥

प्रकाशक :-

श्री बशिष्ठ नारायण रायजी

ग्राम + पो०- बसुका भाया- करहियाँ

जिला- गाजीपुर (उ० प्र०)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

१. **श्री पद्मा देवी**

अध्यक्षा

अभिराम सद्‌गुरु आश्रम, अन्टौर

बेनीपुर दरभगा (बिहार)

२. **श्री राघव कुमार दासजी**

पुजारी

राम लक्ष्मण जानकी मन्दिर, बसुका

भाया- करहियाँ जिला- गाजीपुर

(उ० प्र०)

३. **केशव कुमार "शास्त्री"**

राम लक्ष्मण जानकी मन्दिर, कालूपुर

तारीघाट, गाजीपुर (उ० प्र०)

मुद्रक :-

कैलाश प्रिंटिंग प्रेस

चन्द्रलोक मार्केट, बेनीपुर

दरभंगा (बिहार)